بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-94170-20616, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 06. 03. 2015 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

ऐसे घरों को जो छोटी छोटी बातों पर केवल संसारिकता के कारण अपने घरों को बरबाद कर रहे हैं, सोचना चाहिए तथा विचार करना चाहिए। अगली नस्लें केवल आपकी ही संतान नहीं हैं बल्कि जमाअत तथा क़ौम की भी धरोहर हैं।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلۡتَنۡظُرۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۹﴾

وَلَا تَکُوۡنُوۡا کَالَّذِیۡنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنۡسٰىهُمۡ اَنۡفُسَهُمۡ ؕ اُولٰٓئِکَ هُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿۲۰﴾

ये सूरः हश्र की दो आयतें हैं जिनका अनुवाद इस प्रकार है कि- ऐ वे लोगो, जो ईमान लाए हो अल्लाह का तक़वा धारण करो और हर जान यह नज़र रखे कि वह कल के लिए क्या आगे भेज रही है। और अल्लाह से डरो निःसन्देह तुम जो करते हो अल्लाह उससे भली भांति सूचित रहता है। तथा उन लोगों की भांति न हो जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उन्हें स्वंय अपने आप से अनभिज्ञ कर दिया। यही दुराचारी लोग हैं।

सामान्यतः देखा जाता है कि हर बुराई तथा पाप की जड़ उन बुराइयों और गुनाहों को छोटा समझते हुए उनसे बचने का प्रयास न करना होता है अथवा उन पर ध्यान न देना होता है। परन्तु यही असावधानी फिर इंसान को बड़े गुनाहों में लिप्त कर देती है। क्यूंकि फिर इंसान धीरे धीरे नेकियों को भूल जाता है, नेकी के उन स्तरों को भूल जाता है जो एक मोमिन को प्राप्त करने चाहिएं। अल्लाह तआला का भय कम हो जाता है। तक़वा से दूरी हो जाती है। मरने के बाद के जीवन पूर्ण विश्वास नहीं रहता। जैसे कि एक ईमान का दावा करने वाला अपने इन कर्मों के कारण ईमान की शर्तों से दूर हटता चला जाता है और अल्लाह की दृष्टि में फिर मोमिन नहीं रहता। इन आयतों में अल्लाह तआला ने इसी की ओर ध्यान दिलाया है। अल्लाह तआला ने मोमिनों को बड़ा ज़ोर देकर फ़रमाया कि आज की इस दुनिया में मनबहलावे की दिलचस्पियों, सुख सुविधाओं अथवा सगे सम्बंधियों और दोस्तों के संग सम्बंधों की चिंता न करो बल्कि जो ध्यान देने योग्य चीज़ है वह तुम्हारा कल है। तुम्हारा अल्लाह तआला पर ईमान का स्तर तथा उसका तक़वा धारण करना, तुम्हारी वास्तविक प्राथमिकता और चिंता होनी चाहिए। तुम्हारा मृत्यु के पश्चात का जीवन और हिसाब किताब पर ईमान, तुम्हारी चिंता का केन्द्र बिन्दु होना चाहिए। और यदि यह होगा तो तभी तुम्हारी वास्तविक नैतिक उन्नति भी होगी जो केवल ऊपरी नैतिकता से सम्भव नहीं है अपितु अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति का उद्देश्य लिए हुए होंगे। तुम्हारा आध्यात्मिक उत्थान तथा यह दावा कि मैं मोमिन हूँ, उसी समय सत्य होगा जब कल पर दृष्टि होगी। तुम्हारा विश्वास पूर्ण, निश्छल तथा सत्य पर आधारित ख़ुदा तआला पर ईमान भी उसी समय अल्लाह तआला की दृष्टि में वास्तविक होगा जब अपने कल को सामने रखते हुए अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति का प्रयास करोगे तथा उसके आदेशों का पालन करने का प्रयास करोगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस विषय में फ़रमाते हैं, अर्थात जो पहली आयत मैं ने तिलावत की है कि ऐ ईमान वालो, ख़ुदा से डरते रहो और हर एक तुम में से देखता रहे कि मैं ने अगले जहान में कौनसा माल भेजा है और उस ख़ुदा से डरो जो अपने ज्ञान के कारण सब कुछ जानता है और तुम्हारे कर्म देख रहा है। अर्थात वह पूर्णतः जानने वाला तथा परखने वाला है इस लिए वह तुम्हारे खोटे कर्म, कदापि स्वीकार नहीं करेगा।

अतः अल्लाह तआला के इस आदेश को हम में से प्रत्येक को बड़े ध्यान एंव प्रयास के साथ समझने की आवश्यकता है कि अल्लाह तआला का तक़वा धारण करते हुए हम अपने कर्मों पर ध्यान दें। उन बातों पर नज़र रखें जो हमारा कल संवारने वाली

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हैं। अल्लाह तआला जो हमारे दिलों के पाताल तक दृष्टि रखने वाला है तथा उसे हमारे सम्बंध में पूर्ण ज्ञान है, उसको केवल उन बातों के द्वारा धोखा नहीं दिया जा सकता, जो केवल ऊपरी बातें हैं बल्कि जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि वह खोटे और खरे की जांच करता है। खोटे कर्म वह स्वीकार नहीं करेगा। अतः एक मोमिन के लिए यह अत्यंत भारी चिंता का विषय है कि अपने कल की चिंता करें, जहां कर्मों का हिसाब होना है। ग़ैर मोमिनों की भांति हम केवल दुनिया को ही सब कुछ न समझ लें बल्कि वास्तविक सफलताओं को प्राप्त करने के लिए तक़वा के मार्ग पर चलें। हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इहलोक एंव परलोक में सफलता का एक मन्त्र बताया है अल्लाह तआला ने कि इंसान कल की चिंता आज करे। इसके द्वारा दुनिया में भी सुधार होगा तथा आख़िरत का जीवन भी सुधर जाएगा। फिर आपने फ़रमाया कि क़ुरआन पाक की शिक्षा ولتنظر نفس ما قد مت لغد के अनुसार कर्म करने से न केवल इंसान दुनिया में सफल होता है बल्कि आख़िरत में भी ख़ुदा के फ़ज़्ल का भागीदार होता है। हम कभी परलोक के लिए सम्पत्ति एकत्र नहीं कर सकते जब तक आज ही से उस शांति के स्थान की तैय्यारी न आरम्भ कर दें। इस संदर्भ में मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि निकाह के ख़ुत्बः में भी हम आयत पढ़ते हैं। अल्लाह तआला ने निकाह के खुत्बः में पढ़ी जाने वाली आयतों में विभिन्न बातों की ओर ध्यान दिलाकर कि अपने घनिष्ट रिश्तों का भी ध्यान रखो, इस बन्धन के कारण जो दायित्व आने वाले हैं, उनका भी ध्यान रखो। सच्चाई धारण करो, उसके द्वारा नेक कर्मों की तथा रिश्ते निभाने की तौफ़ीक़ मिलती रहेगी। सत्य के मार्ग पर रहोगे तो अल्लाह तआला तथा उसके रसूल के आदेशों का पालन करो, उसमें तुम्हारा जीवन सफल है। जैसा कि हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ने यह फ़रमाया कि यह जीवन भी सुधर जाएगा और बाद वाला जीवन भी सुधर जाएगा। इस दुनिया में घरेलू जीवन भी जन्नत के समान हो जाएगा तथा अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करने से आख़िरत के इनाम भी मिलेंगे। फिर केवल अपनी ज़ात तक ही नहीं बल्कि इसके कारण संतान भी नेकियों पर चलने वाली होगी। अर्थात केवल अपने कल ही नहीं सुधार रहे होंगे बल्कि अगली नस्ल की कल की भी, एक वास्तविक मोमिन, ज़मानत बनने का प्रयास करेगा और बल्कि ज़मानत बन जाता है कि सामान्यतः फिर आगे की नस्ल भी नेकियों पर क़दम मारने वाली होगी।

अतः यदि वह घर जो अपने अथवा वह परिवार जो छोटी छोटी बातों पर केवल संसारिकता के कारण अपने घरों को बरबाद कर रहे हैं। अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करने वाले बन जांए तो न केवल अपने घरों की शांति का कारण बन जाएंगे, अपनी संतान की सही तरबियत और उनको तक़वा के मार्ग पर चलने की ओर अग्रसर करने वाले भी बन जाएंगे और उनके जीवन संवारने वाले भी बन जाएंगे बल्कि अल्लाह तआला के इनाम इस दुनिया में भी तथा आख़िरत में भी प्राप्त करने वाले बन जाएंगे। अतः ऐसे घरों को जो छोटी छोटी बातों पर केवल संसारिकता के कारण अपने घरों को बरबाद कर रहे हैं, सोचना चाहिए तथा विचार करना चाहिए। अगली नस्लें केवल आपकी ही संतान नहीं हैं बल्कि जमाअत तथा क़ौम की भी धरोहर हैं। उनका मार्ग दर्शन माँ बाप का काम है और यह तभी हो सकता है जब माँ बाप अपने आपको अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों के अनुसार चलाने का प्रयास करने वाले हों। अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

यह तो एक पहलू है जिसकी ओर हर एक मोमिन प्रयास करने की ओर अल्लाह तआला ने ध्यान दिलाया है, कर्म करने की ओर, ताकि अपनी और बच्चों की दुनिया व आख़िरत संवार सकें। हमारे जीवन में असंख्य ऐसे अवसर आते हैं जब हम तक़वा से काम नहीं लेते, परलोक पर नज़र नहीं रखते। इस दुनिया के साधनों एंव आवश्यकताओं को ही सब कुछ समझ लेते हैं। दुनिया के सहारों को अल्लाह तआला के सहारों पर चेतना हीन स्थिति में प्राथमिकता देते हैं। फिर अपनी कमज़ोरियों के कारण, अयोग्यता के कारण, सुस्ती के कारण, इस दुनिया के भविष्य को भी बरबाद करते हैं। इस संसार में जो अपनी कल है उसको भी बरबाद करते हैं और परलोक के कल को भी अनदेखा कर देते हैं। हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल रज़ीअल्लाह अन्हु इस बात की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं कि परिणाम पर अथवा कल पर नज़र रखने का ध्यान किस प्रकार पैदा हो, कि प्रकार नज़र रखी जाए। इसके लिए आप फ़रमाते हैं- इस बात पर ईमान रखे कि والله بما تعملون कि जो काम तुम करते हो, अल्लाह तआला को

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इसकी ख़बर है। इंसान यदि यह विश्वास रखे कि कोई सम्पूर्ण ज्ञान रखने वाला तथा सारी जानकारियां रखने वाला बादशाह है जो हर प्रकार की बदी, धोखा, झूठ, सुस्ती तथा निकम्मेपन को देखता है और उसका बदला देगा तो वह बच सकता है। आपने फ़रमाया ऐसा ईमान पैदा करो।

अतः मोमिन को कल पर नज़र रखने के विषय में कह कर अपने छोटे छोटे घरेलू मामलों से लेकर अपने सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सारे मामलों में तक़वा पर चलने की ओर ध्यान दिला दिया और जो तक़वा पर नहीं चलता फिर वह इस बात को भी मस्तिष्क में रखे कि ऐसा इंसान ख़ुदा की पकड़ में आएगा। अतः हमें इस सोच के साथ अपने दिलों को टटोलते रहना चाहिए तथा हर काम के परिणाम पर नज़र रखनी चाहिए कि ख़ुदा तआला की मेरे हर काम पर नज़र है। यह सोच जब पैदा हो जाए तो मोमिन एक सच्चा मोमिन बन जाता है अथवा बनने की ओर क़दम बढ़ा रहा होता है। जब हम में से हर एक ऐसी सोच के साथ अपना कर्तव्य निर्वाह करेगा तथा इसके लिए प्रयास करेगा तो जमाअत के सामान्य स्तर जो तक़वा के हैं, वे भी ऊँचे होंगे। और यह तक़वा का स्तर बुलन्द होता हुआ जमाअती तौर पर भी स्वंय दिखाई देना आरम्भ हो जाएगा। न तरबियत के विभाग के लिए कठिनाइयां और समस्याए होंगी, न उमूर आम्मा तथा कज़ा के विभाग के लिए समस्याएं और न ही अन्य विभागों को याद दिलाने की आवश्यकता और चिंता होगी।

अतः अपने दिलों को हर समय, सुबह और शाम टटोलते रहना चाहिए और शैतान के हमलों से मन को बचाने का अत्यधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। सबसे भयानक चीज़ इस ज़माने में, वह है इस ज़माने में रूहानी बीमारियां और रूहानी बीमारियों की तो कज़ा के विभाग में भरमार है। और इंसान को पता नहीं लगता कि किस समय शैतान हमारे ख़ून में चला गया और रूहानी बीमारी को बढ़ाना शुरु कर दिया है। इस प्रकार शैतान का हमला रूहानी बीमारी अथवा रूहानी बीमारी जो है, शारीरिक बीमारी से अधिक भयानक है।

इस प्रकार एक मोमिन को इससे पहले कि बीमारी हमला करे, आत्म निरीक्षण करते हुए, पहले से ही सावधानी रखने की काम को आरम्भ कर देना चाहिए। और इस समाज में, जैसा कि मैं ने कहा, कि निरन्तर वातावरण में रूहानी बीमारियां फैली हुई हैं। इस लिए अपने आपको बचाने के लिए लगातार कर्म की भी आवश्यकता है। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के संदर्भ में आया है कि आप जब भी रात को उठते तो बड़ी विनयता एंव करुणा के साथ दुआएं करते। एक बार हज़रत आयशा रज़ीअल्लाहो तआला अन्हा ने आपकी इसी दशा को देखकर निवेदन किया कि आपको तो अल्लाह तआला ने सब कुछ माफ़ कर दिया है, आपको इतनी चिंता करने की क्या आवश्यकता है? इतनी करुणा के साथ आप दुआएं क्यूं करते हैं? आपने फ़रमाया कि मेरी मुक्ति भी ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से है, मुझे भी हर समय उसकी ओर झुके रहने की आवश्यकता है। अतः जब रसूल करीम सलल्लाहो अलैहि वसल्लम इन सबके बावजूद इतनी करुणा का प्रदर्शन करते हैं तो फिर और कौन है जो कह सके कि मुझे हर समय, हर काम में, कल पर नज़र रखने की आवश्यकता नहीं। और काम करके फिर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को तलाश करने की आवश्यकता नहीं। अतः हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है, हर समय तक़वा पर चलते हुए अपने कामों तथा अपनी स्थितियों के अवलोकन की आवश्यकता है। याद रखना चाहिए कि सामान्यतः एक इंसान ख़ुदा तआला को तीन प्रकार से बुलाता है अथवा तीन प्रकार के लोग हैं जो हमें सामान्यतः दुनिया में दिखाई देते हैं जो ख़ुदा तआला से दूर हैं या दूर होते हैं।

एक तो वे लोग जो ख़ुदा तआला की अस्तित्व के इन्कारी हैं और बड़ी ढिठाई से कह देते हैं कि ख़ुदा तआला कोई चीज़ नहीं है। जैसा कि आजकल की एक बड़ी संख्या इसी दृष्टि कोण पर जमी है वे अपने आपको पढ़ा लिखा कहते हैं। उन्हें अपनी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

शिक्षा पर बड़ा अभिमान है और ये लोग मीडिया तथा इंटर नैट और विभिन्न माध्यमों के द्वारा नौजवानों तथा मंद बुद्धि के लोगों को अपने विचारों के द्वारा दूषित करते रहते हैं।

दूसरे वे लोग हैं जिनको वास्तविक और सच्चा ईमान, सर्वशक्ति मान ख़ुदा पर नहीं है, जिसके सामने उन्हें एक दिन परस्तुत होना है और अपने कर्मों का हिसाब देना है। परन्तु फिर भी उसके कहने के अनुसार काम नहीं हैं।

तीसरे वे लोग हैं जो दुनिया के बखेड़ों में इतना डूब गए हैं कि ख़ुदा को भूल गए हैं। कभी ध्यान भी आ जाए तो नमाज़ भी पढ़लेंगे, दुआ भी कर लेंगे, लेकिन नियमानुसार नहीं हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि ऐसे लोगों के साथ फिर अल्लाह तआला ऐसा व्यवहार करता है कि فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ अल्लाह तआला ने स्वंय उन्हें अपने आप से ग़ाफ़िल कर दिया और ऐसे लोग कभी मन की शांति नहीं पाते।

अतः मोमिनों को अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि यदि वास्तविक तक़वा तुम्हारे अन्दर है और तुम मोमिन हो, ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर विश्वास रखते हो, उसके एक मात्र होने पर ईमान व आस्था है तो फिर इन शर्तों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करो जिसके अनुसार जीवन व्यतीत करने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है। और वह यह है कि अपने हर काम के परिणाम को देखो तथा इस विश्वास पर दृढ़ हो जाओ कि ख़ुदा तआला तुम्हारे प्रत्येक कर्म और काम को देख रहा है और जब इंसान की ऐसी सोच हो तो फिर हर काम करने का ढंग ही बदल जाता है और इंसान स्वंय अनुभव कर लेता है कि इसके कारण अल्लाह तआला की कृपा भी मुझ पर हो रही है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल इस अंश की व्याख्या करते हुए एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि ऐसे लोगों की भांति मत हो जाओ कि जिनके विषय में फ़रमाया कि نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ अर्थात जिन्होंने उस रहमत और पवित्रता के स्रोत प्यारे ख़ुदा को छोड़ दिया और अपनी चालाकियों, कुकर्मों, आगे न देखने वालों, अर्थात विभिन्न प्रकार की चालों और रूबा बाज़ियों के द्वारा सफल होना चाहते हैं। रूबा बाज़ियों का अर्थ है लोमड़ियों की भांति चालाकियां करते हैं, जो मुहावरा है उर्दू में, बड़ा चालाक है लोमड़ी की भांति।

फिर आप फ़रमाते हैं कि कठिनाइयां इंसनान पर आती हैं। अनेक आवश्यताएं इंसान को पड़ती हैं। खाने पीने की आवश्यकता है। दोस्त भी होते हैं, दुश्मन भी होते हैं। परन्तु इन सारी कठिनाइयों में मुत्तक़ी की यह शान होती है कि वह ध्यान और विचार रखता है कि ख़ुदा से बिगाड़ न हो। अर्थात ख़ुदा तआला को हर समय याद रखता है। फ़रमाया- कि अतः ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि उन लोगों की भांति न हो जाओ जिन्होंने ख़ुदा तआला से सम्बंध तोड़ लिया। इस परिणाम यह होगा कि तुम दुःखों से सुरक्षित न रह सकोगे तथा सुख न पाओगे बल्कि हर ओर से अपमान की मार होगी और सम्भव है कि वह अपमान तुम्हें दोस्तों की ओर से ही आ जाए। ऐसे लोग जो ख़ुदा तआला से सम्बंध तोड़ते हैं, वे कौन होते हैं? वे दुष्ट एंव कुकर्मी होते हैं, उनमें सच्चा ईमान नहीं होता। यही नहीं कि वे ईमान में कच्चे हैं, नहीं, अल्लाह तआला के प्राणियों से भी प्रेम नहीं करते। अर्थात न ख़ुदा के हक़ अदा करते हैं और न बन्दों के हक़ अदा करते हैं।

अतः हम अपने हर एक कर्म को ख़ुदा तआला के आदेशानुसार पालन करने का प्रयत्न करें। अपने अस्थाई लाभ के बजाए अपने कल पर नज़र रखें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

Khulasa Khutba juma Huzoor Anwer 6 March 2015

BOOK POST (PRINTED MATTER)

TO.....

.....

.....

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

From; Office Ansarullah Bharat, Aiwane-e-Ansar, Mohalla Ahmadiyya, Qadian, 143516, Dt. Gudaspur, PUNJAB

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com